Contents

विषय-सूची

साठोत्तर हिन्दी कहानियों में पारिवारिक जीवन के आयाम

(सन् १९६१ ई० से सन् १९७५ ई० तक)

पृष्ठ

प्रथम अध्याय : 19 - 55

:: हिन्दी कहानी साहित्य की विकास परंपराएं :

साठोत्तर कहानी विषय-वस्तु और शिल्प

: पूर्व-पीठिका

:: हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी

: विकास यात्रा

:: नयी कहानी

:: साठोत्तर कहानी

:: सचेतन कहानी

:: अकहानी

:: समानान्तर या समकालीन कहानी

:: समकालीन ग्रामीण कहानी

: निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : 56 - 87

परिवार को प्रभावित करने वाले तत्व

१- वैवाहिक संस्था

२- मनोविज्ञान

पृष्ठ

:: स्वतंत्र नारी मनोविज्ञान

:: दाम्पत्य सम्बंधों का यथार्थ

:: यौन सम्बंध

:: आधुनिक यथार्थ बोध

३- इतर पारिवारिक सम्बंध

: निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : 88 - 121

आधुनिक युग में पारिवारिक जीवन के आयाम :

बदलते हुए भारतीय जीवन मूल्यों के विशेष सन्दर्भ में-

क- स्वातंत्र्योत्तर कालीन जीवन आयाम

ख- साठोत्तर कालीन परिस्थितियाँ एवं नवीन आयाम

ग- सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ

घ- संयुक्त परिवार: नये पारिवारिक जीवन आयाम

ङ- जीवन मूल्यों में संक्रमण

च- विघटन तथा उसके कारण

: बढ़ती वैयक्तिकता, व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा सामाजिक सम्पर्क का प्रभाव

: नारी का आत्मगौरव व स्वतंत्रता

: औद्योगीकरण

: नगरीकरण

: राजकीय नियंत्रण एवं कानून प्रथा

: दहेज प्रथा के परिणाम

पृष्ठ

ज- विघटन का मूल्यांकन तथा इतर आयाम

:: निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 122-156

पारिवारिक जीवन मूल्य
(आधुनिक युग के विशेष सन्दर्भ में)

क- जीवन मूल्य
(सद्वस्तु, मूल्यानुभूति, प्रतिमान, संकल्प)

ख- मूल्यों को प्रभावित करने वाले पक्ष
:: शिक्षा का प्रसार
:: पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव
:: आर्थिक व्यवस्था

ग- जीवन मूल्यों के विविध रूप

घ- आधुनिक मूल्य विकास के विविध पक्ष
:: परम्परागत मान्यताओं का खंडन
:: व्यक्तिगत जीवन व स्वतंत्र यौन सम्बंध
:: परम्परा के प्रति विद्रोह
:: पारिवारिक सम्बंध और नये जीवन आयाम
:: नये दृष्टिकोण का प्रभाव

:: मूल्यांकन

पंचम अध्याय : 157-238

साठोत्तर कहानी और पारिवारिक जीवन-

पृष्ठ

क- परिवार का स्वरूप परिवर्तन
:: पारिवारिक जीवन का विघटन
:: ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश जन्य द्वन्द्व व पारिवारिक विघटन-
:: पीढ़ी संघर्ष
:: आधुनिक ढंग नारी का बदलता जीवन
:: नारी का अर्थार्जन और विघटन के इतर आयाम

ख- बदलते प्रेम और शारीरिक सम्बन्ध -
:: प्रेम सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव
:: शारीरिक सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव
:: वासनात्मक सम्बंध तथा पारिवारिक जीवन
:: काम सम्बंधों के इतर आयाम(बाल सम्बन्ध)
:: काम सम्बन्ध और बढ़ती आर्थिक आवश्यकतायें
:: उन्मुक्त यौन सम्बंध
:: काम अतृप्ति तथा तज्जन्य विकृतियाँ
:: काम सम्बन्धों के इतर आयाम
:: निष्कर्ष - .

षष्ठ अध्याय : 239-266

स्वातंत्र्योत्तर कहानी और पारिवारिक जीवन मूल्य-
:: परिवार का स्वरूप और विघटित होते मूल्य
:: पदार्थों का अलगाव तथा वैयक्तिक मूल्यों की स्थापना
:: परम्परागत मूल्यों की आस्था तथा परिवेश से संघर्ष

पृष्ठ

:: नारी का अर्थार्जन और विघटित मूल्य
:: दाम्पत्य जीवन और बदलते मूल्य
:: परिवेश जन्य भिन्नता और मूल्य परिवर्तन
:: निष्कर्ष-

सप्तम अध्याय : 267-301

सामाजिक सन्दर्भ में पारिवारिक परिवेश और
स्वातंत्र्योत्तर कहानी -
:: दहेज प्रथा
:: अर्थ व्यवस्था
:: सामाजिक परिवेश और परिवार का स्वरूप
:: पाश्चात्य जीवन दृष्टि और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण
:: दाम्पत्य जीवन की संवादिता और विसंवादिता
:: विवाहेतर तथा विवाहोत्तर सम्बंधों की समस्याएँ
:: परिवर्तित सामाजिक चेतना
:: परंपरागत मान्यताओं के प्रति विद्रोह
:: निष्कर्ष -

अष्टम अध्याय : 302-334

प्रमुख कहानीकार और उनकी पारिवारिक -
जीवन दृष्टि ।
:: मोहन राकेश
:: राजेन्द्र यादव
:: उषा प्रियम्बदा
:: मन्नू भंडारी

पृष्ठ

:: डॉ० महीप सिंह
:: दीप्ति खंडेलवाल
:: ज्ञानरंजन

उपसंहार : 335 – 352

परिशिष्ट : 353 – 378

--